# स्वामी विवेकानन्दः भारतीय जीवन पर वेदान्त का प्रभाव

प्रोú मन्जु, राजकीय महाविद्यालय छछरौली।

''मैं वह दिन शीघ्र देखना चाहता हूँ जिस
दिन प्रत्येक घर में शालाग्राम ;विष्णु भगवानद्ध
की मूर्ति के साथ आबाल–वृ(–वनिता वेद
की पूजा करते दृष्टिगोचर होगें।''

स्वामी विवेकानन्द

वेद नामक शब्दराशि किसी पुरूष के मुहँ से निकली नहीं है। उसके साल और तारीख का अभी निर्णय नहीं हुआ है, ओर न आगे चलकर होगा ही हिन्दुओं के मतानुसार वेदों का दूसरा कोई प्रभाव नहीं है। वेद स्वतः प्रमाण है, क्योंकि वेद अनादि अनन्त है, वे ईश्वरीय ज्ञानराशि है जो किसी समय व्यक्त और किसी समय अव्यक्त होती है। सायनाचार्य ने एक स्थान पर लिखा है, 'यो वेदेभ्यो{खिलं जगत् निर्ममे'– जिसने वेद ज्ञान के प्रभाव से सारे जगत की सृष्टि की। वेद कभी लिखे नहीं गये, न कभी सृष्ट हुए वे अनादि काल से वर्तमान है। जैसे सृष्टि आदि और अनन्त है वैसे ही ईश्वर का ज्ञान भी। वेद का अर्थ है यह ईश्वरीय ज्ञान की राशि है। विद् धतु का अर्थ है जानना। वेद के रचयिता को कभी किसी ने नहीं देखा। इसलिए इसकी कल्पना करना भी असंभव है। वेदान्त नामक ज्ञानराशि ट्टषि नामधरी पुरूषों के द्वारा अविष्कृत हुई है। ट्टषि शब्द का अर्थ है मन्त्राद्रष्टा, पहले ही से वर्तमान ज्ञान को उन्होंने प्रत्यक्ष किया है, वह ज्ञान तथा भाव उनके विचारों का पफल नहीं था। वे भाव अनादि काल से ही इस संसार में विद्यमान थे, ट्टषि ने उनका अविष्कार मात्रा किया। ट्टषिगण आध्यात्मिक अविष्कारक थे।

यह वेदनामक ग्रन्थराशि प्रधनतः दो भागों में विभक्त है– कर्मकाण्ड और ज्ञानकाण्ड। कर्मकाण्ड के मुख्य विषय है – जैसे साधरण मनुष्यों के कर्त्तव्य, ब्रह्चारी, गृहस्थ, वानप्रस्थी तथा सन्यासी, इन विभिन्न आश्रमियों के भिन्न–भिन्न कर्त्तव्य अब भी थोड़े बहुत माने जा रहे है। दूसरा भाग ज्ञानकाण्ड हमारे ध्र्म का आध्यात्मिक अंश है। उसका नाम वेदान्त है, अर्थात् वेदों का अन्तिम भाग– वेदों का चरम लक्ष्य। वेद ज्ञान के इस सार का नाम है वेदान्त अथवा उपनिषद्।

**वेदान्त सारः**

एपफú आरú एलकिन के अनुसार ''स्वामी विवेकानन्द ने वेदान्त दर्शन को, जो मानव की विभिन्न महानतम बौ(िक व्यवस्थाओं में से एक है, इस सहज ढंग से प्रस्तुत किया के उसे पूरब या पश्चिम दोनों जगत समझने में सपफल हुए। ऐसा कर उन्होनें दर्शा दिया कि भारत अपने विवेक तथा बु(ि के बल से भक्ति का अध्किारी है।''

**कद्ध ईश्वर का सर्वव्यापी स्वरूपः–**

1द्ध ईश्वर की सर्वत्रा उपस्थिति ही नैतिकता का आधर है। निर्गुण ब्रह्मवाद ही, सब प्रकार के नीति विज्ञानों की नींव है। यह तुम तभी समझोगे, जब सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को एक अखण्ड स्वरूप समझोगे कि दूसरे को प्यार करना अपने को ही प्यार करना है। दूसरे को हानि पहुँचाना अपनी ही हानि करना है। तभी हम समझेंगे कि दूसरे का अहित करना क्यों अनुचित है। सम्पूर्ण सृष्टि ईश्वर का स्वरूप है। इस ब्रह्माण्ड में विचरण करने वाले समस्त जीवों में एक ही महत् आत्मा का वास है। इस भाव को समझने पर तुम देखोगे कि ज्यों–ज्यों तुम दूसरों को मदद पहुँचाने के लिए कर्म करोगे, त्यों–त्यों तुम अपना ही क्ल्याण करते रहोगे। इसी से अे(तिक नैतिकता के सि(ान्त का प्रस्पफुटन होता है जिसे एक शब्द में व्यक्त किया गया है– आत्म त्याग।

2द्ध जो प्रेम पूर्ण तथा निस्वार्थ हो वह प्रेम है और वह सचमुच ईश्वर का प्रेम है। संसार के समस्त प्रेम प्रदर्शन में निरा दम्भ है, निस्सारता है, खोखलापन है। नाशवान् वस्तु प्रेम नहीं कर सकती है और न ही नाशवान् वस्तु पर प्रेम ही किया जा सकता है। साधरण प्रेम केवल पाशविक आकर्षण मात्रा होता है।

3द्ध यह भी एक वैज्ञानिक सत्य है कि इस संसार की प्रत्येक वस्तु अपने लक्ष्य की ओर गतिशील है। केवल समय ही इनको आगे और पीछे बनाये हुए है। अन्ततः इस विश्व का कण–कण, तुम और मैं, समस्त वनस्पतियों तथा जीव जन्तुओं को पूर्णता के अनंत महासागर तक पहुँचाना है और मुक्त होकर ईश्वर में विलीन हो जाना है।

4द्ध प्रत्येक जीव एक इकाई है और ईश्वर समस्त इकाईयों का योग है। इस पृथ्वी के प्राणियों में अज्ञानता का बाहुल्य है, परन्तु ईश्वर स्वयं माया का नियंता है, जिसमें विद्या ;ज्ञानद्ध तथा अविद्या ;मायाद्ध दोनों का वास है। यही ईश्वर इसको स्थिर चलायमान स्वरूप से प्रकाशित करता है। ब्रह्म–व्यष्टि तथा समष्टि, जीव तथा ईश्वर से ऊपर है और वह विभक्त नहीं किया जा सकता।

**<u>खद्ध ईश्वर एक है परन्तु उसके नाम अनेक हैः–</u>**

1द्ध उपनिषदों का उद्देश्य चरम एकत्व के अविष्कार की चेष्टा है और बहुत्व के भीतर एकत्व की खोज ही ज्ञान है।

2द्ध परमात्मा, ब्रह्मा अल्लाह, यीशु पिता, याहोवा, माजदा, ताओ, सत्श्री अकाल इत्यादि एक ही दिव्य शक्ति के विभिन्न नाम है। यही श्री रामकृष्ण की शिक्षाओं का प्रमुख आधर था। इसी महान संदेश द्वारा उनके प्रमुख शिष्य स्वामी विवेकानन्द ने, न केवल विश्व धर्म संसद को बल्कि सम्पूर्ण पाश्चात्य जगत को हिला कर रख दिया।

3द्ध यदि हम सब किसी झील से अपने–अपने पात्रा, जैसे प्याला, लोटा, बाल्टी इत्यादि में जल लेने जायें तो हमारे बर्तन के आकार के अनुसार ही जल का आकार बनेगा। प्याले का पानी, प्याले के

आकार के अनुरूप ही होगा। परन्तु पिफर भी सभी बर्तनों में जल और केवल जल ही होगा। यही तथ्य ध्र्म के लिए भी सच है। हमारा चित्त विभिन्न पात्राों की भांति है। ईश्वर उस जल की भांति है जो भिन्न–भिन्न पात्राों में भर गया है और प्रत्येक पात्रा की भांति ही दृष्टिगोचर होता है। हम सभी ईश्वरीय अनुभूति के लिए प्रयासरत है और वही ईश्वर हमें विभिन्न रूपों में दृष्टिगोचर होता है। परन्तु वह ईश्वर ही है, जो विभिन्न रूपों में होते हुए भी एक ही है।

4द्ध सृष्टि की रचना अनेकता में एकता के सि(ान्त पर आधरित है। यदि ईश्वर समस्त ध्र्मों का केन्द्र है और हम सब उसकी ओर भाग रहे हैं, तब निर्विवाद हम सब ही ईश्वर रूपी केन्द्र पर पहुँचने की तैयारी कर रहे है। उस एक केन्द्र में समाकर हमारी समस्त विभिन्नताओं का स्वतः अन्त हो जायेगा।

5द्ध सर्वप्रथम मैं मानव जाति को 'विध्वंसकारी' प्रवृत्ति से दूर रहने का अनुरोध् करूंगा। मूर्तिभंजक किसी भी रूप में संसार की भलाई नहीं कर सकते। निर्माण, न की विनाश मानव का लक्ष्य होना चाहिए। यदि तुम किसी की सहायता नहीं कर सकते तो किसी को आहत भी करने की इच्छा तुम्हारे मन में नहीं होनी चाहिए। किसी की भावनाओं का अनादर मत करो। जब तक उन भावनाओं में ईमानदारी है। दूसरे, मनुष्य जहां है वहीं से उसे आगे बढ़ने के लिए मदद करनी चाहिए।

6द्ध वेदान्त की कवितामयी शैली कितनी छन्दग्राही तथा तार्किक है। जिस प्रकार पृथक–पृथक नदियों का उद्गम यद्यपि विभिन्न पर्वतों से होता है, परन्तु सभी की धराएं, टेढे–मेढे या सीध्े मार्ग अपनाती हुई अन्ततः एक ही सागर में विलीन हो जाती है। उसी प्रकार, विभिन्न ध्र्म भी पृथक–पृथक आस्थाओं का अनुसरण करने के उपरान्त भी, सीध्े या वक्र मार्गों से होते हुए भी, अन्ततः उसी एक महाशक्ति में समा जाते है।

**गद्ध आत्मा शाश्वत एवं सर्वव्यापी हैः–**

1द्ध जब तुमने अपने शरीर को समझते हो, तब तुम विश्व से अलग हो। जब तुम अपने आप को आत्मा स्वरूप मानते हो, तब तम्हें सम्पूर्ण विश्व एक परिवार लगने लगता है।

2द्ध विश्व में केवल एक ही आत्म तत्व है। सब कुछ केवल उसकी अभिव्यक्तियाँ है।

3द्ध ज्ञान, मुक्ति, योग और कर्म– ये चार मार्ग मुक्ति की ओर ले जाने वाले हैं।

4द्ध प्रत्येक व्यक्ति को उस मार्ग का अनुसरण करना चाहिए, जिसके लिए वह योग्य है।

**घद्ध मनुष्य का दैवी स्वरूपः–**

1द्ध स्वामी विवेकानन्द जी ने मानव को अपने भीतर छिपे देवत्व को पहचानने को कहा। उनके अनुसार, ''मनुष्य पापी नहीं है, वरन् वह तो दिव्यत्व से निकली एक प्रकाश किरण है।''

2द्ध क्या तम्हें इस बात का ज्ञान है कि तुम्हारे भीतर कितनी ऊर्जा, कितना बल तथा कितनी शक्तियाँ सुषुप्तावस्था में पड़ी है? वैज्ञानिक कितना ही जान पायें हैं? करोड़ों वर्ष बीत जाने के बाद भी मनुष्य की शक्तियों के नगण्य भाग का ही प्रकटीकरण हो पाया है। इसलिए तम्हें स्वयं को कभी निर्बल नहीं समझाना चाहिए। तुम्हारे भीतर एक अनन्य शक्ति संपन्न सागर हर्ष से कल्लोल कर रहा है, जिसका तुम्हें अत्यन्त सीमित ज्ञान है।

3द्ध समस्त शक्तियाँ तुम्हारे भीतर ही समाहित है, पिफर तुम्हारे लिए कुछ भी कर पाना कैसे असंभव तथा असाध्य हो सकता है। तुम्हें इस कथन पर कतई विश्वास नहीं करना चाहिए कि तुम निर्बल हो..... तुम तो किसी मार्गदर्शक के बिना भी सब कुछ कर सकने में समर्थ हो। तुम्हारे अन्दर सभी क्षमतायें विद्यामान है। अपनी इन ईश्वरीय शक्तियों को व्यक्त करो।

4द्ध हे प्रकाश पुंज अब जाग जाओ, तुम सदैव से पवित्रा हो, तुम्हारा स्वरूप अनादि और अनन्त है। हे सर्वशक्तिमान, उठो और अपना वास्तविक स्वरूप प्रदर्शित करो। ईश्वर सदा से ही हमारे अन्दर वास करता आया है, जिसका स्वरूप अनन्त, सर्वशक्तिमान, दयालु, निर्दोष और असीमित है।

5द्ध विश्व का इतिहास उन चन्द पुरूषों का इतिहास है, जिन्हें अपने आप पर विश्वास था। आत्म विश्वास अन्दर की सोई हुई दिव्य शक्तियों को जागृत करता है। ज्यों ही किसी मनुष्य या राष्ट्र का आत्मबल समाप्त होता है त्यों ही उसका अवसान निश्चित हो जाता है।

6द्ध यदि तुम्हें अपने 33 करोड़ देवी देवताओं पर और उन देवताओं पर जिन्हें विदेशी शक्तियाँ तुम थोपती चली आयी है, विश्वास है और स्वयं पर नहीं, तब तुम्हे विनाश के कगार से कोई नहीं बचा सकता।

7द्ध तुम जैसा सोचते हो, वैसा ही बन जाते हो। यदि तुम अपने आपको दुर्बल समझते हो तो दुर्बल बन जाओगे। यदि शक्तिशाली, तो शक्तिशाली।''

8द्ध वेदान्त के अनुसार मनुष्य की सबसे बड़ी भूल उसका स्वयं को पापी सोचना है, उसकी सही सोच कि वह असहाय है तथा सामर्थ्यहीन है, उसे निर्बल बनाती है।

9द्ध वेदान्त सर्वप्रथम स्वयं में विश्वास की शिक्षा देता है। संसार के कुछ ध्र्मों का कहना है कि जो मनुष्य अपने किसी इष्ट में विश्वास नहीं रखते वह नास्तिक होते हैं, परन्तु वेदान्त का कथन है कि जो व्यक्ति स्वयं पर विश्वास नहीं रखता वह नास्तिक है।

10द्ध पुराना ध्र्म ईश्वर पर अविश्वास रखने वाले व्यक्ति को नास्तिक कहता था अब नये ध्र्म का कहना है कि जो स्व्यं में विश्वास नहीं रखता वह नास्तिक है।

वेदान्त को व्यावहारिक स्तर पर सुगम रूप में समझने में सगुणोपासना और मूर्ति–पूजा की मूल्यवान भूमिका है। मूर्ति अमूर्त और दुर्बोध् सि(ान्त को मूर्त और सुबोध् रूप में प्रस्तुत करने की अनूठी

क्षमता से युक्त है। इसलिए निगुण–सगुण की समन्वित साध्ना ही वेदान्त की सम्पूर्ण साध्ना है। निर्गुण आत्मा की शक्ति सगुण शरीर में ही चरितार्थ होती है। यु( में सबल आत्मा से युक्त शक्तिशाली और स्वस्थ तन की आवश्यकता होती है। इसलिए केवल निर्गुण ब्रह्म से काम नहीं चलता। निर्गुण सगुण रूप में ही व्यक्त होता है। स्वामी जी की मान्यता है कि पफुटबाल खेलते समय गेंद के साथ एकाकार होने से ही गीता का संदेश अध्कि समझ में आता है।

वेदान्त भारत के इतिहास ओर भूगोल की उपज है। अतः यह राष्ट्र–भक्ति और राष्ट्रीयता या भारतीयता की अभिव्यक्ति का सबसे शक्तिशाली माध्यम है। वेदान्त की पुण्य जन्मभूमि भारत भी स्वामी जी की दृष्टि में आत्मा की भाँति अनादि और अनन्त है। वे अपनी जन्मभूमि पर गर्व और गौरव का अनुभव करते हुए कहते हैं ''आत्मा जैसे अनादि, अनन्त और अमृत स्वरूप है, वैसे ही हमारी भारत भूमि भी है, और हम इसी देश की सन्तान है।'' वे वेदान्त के मुक्ति शब्द की राष्ट्रीय स्वतन्त्राता–आंदोलन के संदर्भ में व्याख्या करते हुए उसे देश की स्वतन्त्राता से जोड़कर कहते हैं, ''मुक्ति अथवा स्वाधीनता –दैहिक स्वाधीनता, मानसिक स्वाधीनता, आध्यात्मिक स्वाधीनता, यही उपनिषदों का मूलमंत्रा है। यहीं पर हमारी जाति के अन्तिम चिन्ह स्वरूप, परन्तु महामहिमान्वित गुरू गोबिन्द सिंह ने जन्म लिया था, उन्होने ध्र्म के लिए अपना और अपने प्राणों से बढ़कर प्रियजनों का खून बहाया।

**भारतीय जीवन पर वेदान्त का प्रभावः–**

भारतीय जीवन पर वेदान्त का प्रभाव दिखाते हुए स्वामीजी ने कहा– हिन्दु ध्र्म का मूल आधर वेद अथवा उसी के अन्तर्गत आने वाले उपनिषद है। अन्य पुराण आदि शास्त्रा भी अप्रामाणिक नहीं है, तथापि आपसी मतभेद होने पर उपनिषद ही ग्राह्मा है। उपनिषदों के आधर पर भारत के सभी ध्र्मों के बीच समन्वय स्थापित करना सम्भव है, पिफर ''यह विशेष रूप से स्मरण रखना होगा– उपनिषद कहती है, हे मानव, तेजस्वी बनो, दुर्बलता का परित्याग करो .... और उपनिषद दिखा देती है कि वह मुक्ति तुम्हारे भीतर पहले से ही विद्यमान है ..... पृथ्वी भर के लोग भारत से यह महान तत्व सीखने के लिए प्रतीक्षा कर रहें हैं। व्यक्त अथवा अव्यक्त रूप से प्रत्येक व्यक्ति के भीतर देवत्व विद्यमान है'' यह कहकर स्वामी जी ने दिखा दिया इस तत्व को स्वीकार तथा उपयोग करने से समाज में अनेक वांछनीय परिवर्तन लाए जा सकते है। तदुपरान्त वे कहते हैं, '' हमारे उपनिषदों का एक और महान भाव है– समग्र विश्व अखण्डता, जिसे पाने के लिए संसार प्रतीक्षा कर रहा है।'' स्वीमी देशभक्त होकर भी ऐसा असंभव बात में विश्वास नहीं रखते थे कि वर्तमान युग में विश्वप्रेम या विश्व के साथ आदान प्रदान को छोड़कर भी भारत अपनी अलग निरपेक्ष सत्ता बनाए रख सकता है– ''राजनीति एवं सामाजिक क्षेत्राों में बीस वर्ष पहले जो समस्याएं केवल राष्ट्रीय थी, आज केवल राष्ट्रीयता के आधर पर उन्हें हल नहीं किया जा सकता। अन्तर्राष्ट्रीय आधर पर उदार दृष्टि के साथ विचार करके ही उन्हें हल किया जा

सकता है। आध्यात्मिक विश्वविजय से मेरा तात्पर्य जीवनप्रद विचारों के प्रचार से है न कि उन सैकड़ों अन्धविश्वासों से जिन्हें हम शताब्दियों से सीने से चिपकाये हुए हैं। उन्हें तो भारत से उखाडकर दूर पफैंक देना चाहिए। ताकि वे सदा के लिए नष्ट हो जाये।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वेदान्तवार विवेकानन्द की वाणी में वेदान्त अपने सर्वांग रूप में सक्रिय और साकार हो उठा है। उनके भाषणों में वेदान्त ऊँचे–ऊँचे सि(ान्तों से समाच्छन्न एक शास्त्रा मात्रा नहीं है। वरन् वह उन्मेषकारी अनुभूतियों का एक सक्रिय, जीवंत, उद्‌बोध्क आन्दोलन है, जो पाप, पतन, भ्रष्टाचार, गरीबी, दीनता, कुण्ठा, पराधीनता आदि विकारों की कारा से मुक्ति दिलाने और शक्ति, स्वतन्त्राता, सन्मति, समुन्नति और विजय के शुभ संकल्पों को साकार करने की दिशा में उन्मुख और अग्रसर है। वस्तुतः वेदान्त व्यक्ति के उत्थान और समाज तथा राष्ट्र के निर्माण, कल्याण की बहुआयामी योजना से युक्त एक विराट विध है, जो स्वामी विवेकानन्द की वाणी में पूर्ण ढंग से साकार हुई है।

''वेदान्त को कायर भी स्वीकार कर सकता है किन्तु अत्यन्त वीर ही उसे आचरण में ला सकता है। तब उनसे पूछा गया '' जब हम ताकतवर को किसी कमजोर को सताते देखें तो क्या करें'' उन्होने उत्तर दिया– ''ताकतवर की खूब ठुकाई करो।''

**संदर्भ पुस्तकेः–**

हिन्दु ध्र्म – स्वामी विवेकानन्द

वेदान्त – स्वामी विवेकानन्द

वेदान्त – सि(ान्त और व्यवहार

स्वामी विवेकानन्दः भारतीय युवा शक्ति के नायक

स्वामी विवेकानन्दः जीवन एवं विचार

युगनायक – स्वामी विवेकानन्द।